VIKAS CHAUHAN - 9027545453

Chapter No-3

⇒⇒ समास **

⇒ समस्त पद → समास विधि से बना नया शब्द

⇒ पूर्व पद → पहला पद / प्रथम पद

⇒ उत्तर पद → दुसरा पद

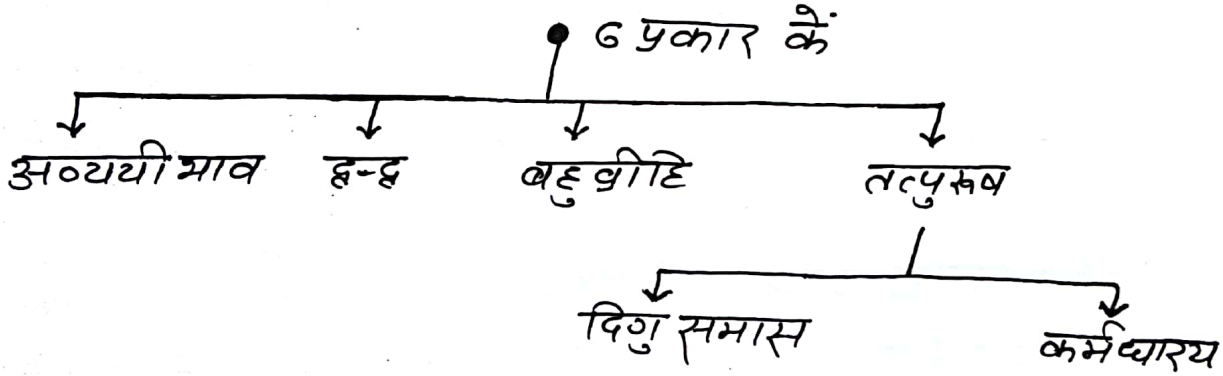
सम् + आस
↓ ↓
पास रखना
संक्षिप्त रूप

⇒ समास विग्रह → समस्त पद का विस्तृत रूप

⇒ राजकुमार → समस्त पद / सामासिक पद

* राज - पूर्व पद
* कुमार - उत्तर पद
* राजा का कुमार → समास विग्रह
  → ~~सामासिक पद~~

* समास के प्रकार



Scanned by CamScanner

1. अव्ययी समास

परिभाषा → इसका पूर्व पद अव्यय / उपसर्ग होता है।-
या, प्रथम पद की प्रधानता होती है।-

example → प्रतिदिन, यथाशक्ति, आजन्म, भरपेट
बेकाम, यथाविधि, आजीवन, बेईमान

यथा → means
↓
के अनुसार

Repeted word - रातोरात, दिनोदिन

अव्यय → जिनके ऊपर लिंग, वचन, काल, कारक का फर्क न पड़े।

Scanned by CamScanner

2. द्वन्द्व समास

⇒ इसमें सभी पद प्रधान होते हैं।

⇒ या तो एक दुसरे के पुरक होंगे या फिर विलोम

⇒ ज्यादातर शब्दो मे (-) चिह्न लगा होता है लेकिन सभी में नहीं।- योजक

⇒ बीच मे और लगा कर कर सकते है।-

⇒ माँ - बाप, बेटा - बेटी
भला बुरा, गौरीशंकर, सीताराम, लेन देन
शिव पार्वती, धर्मा धर्मी, ठंडा गरम, घोडा बहुत
इतर और इतर

1. इतरेतर द्वन्द्व → जिसमे "और" से सभी पद जुड़े हुये हो और पृथक अस्तित्व रखते हो।-

⇒ देश विदेश - देश और विदेश
⇒ हरिशंकर - हरि और शंकर
⇒ राधाकृष्ण - राधा और कृष्ण
⇒ भातदाल - भात और दाल
⇒ सीताराम - सीता और राम
⇒ पचपन - पचास और पाँच

* दोनो पद प्रधान होते है और अपना अलग x 2 अस्तित्व रखते है।-

शब्द 3
⇒ तन - मन - धन ③

२. ⇒ समाहार द्वंद्व → अर्थ ⇒ "समूह" या बगैरह शब्द / आदि
यानि समूह का बोध कराये / इसमें दोनो पदों के अलावा अन्य पद भी छिपे रहते है। -

⇒ नाक - कान
⇒ हाथ - पाँव
⇒ भूत - प्रेत
⇒ बाल - बच्चा
⇒ कीडा - मकोड़ा
⇒ चाय - पानी
⇒ गोला - बारूद
⇒ चाय - वाय
⇒ मिठाई - सिठाई

इन दोनो पदो के अलावा अन्य को शामिल किया जाता है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से। -

Scanned by CamScanner

3. वैकल्पिक द्वंद्व → इस प्रकार के समास में दो पदो के बीच "या" "अथवा" आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे होते है।-

⇒ ज्यादातर विपरीतार्थक शब्दो का योग रहता है।-

पाप-पुण्य
सुख-दुःख
लाभ-हानि
थोडा-बहुत
भला-बुरा
आज-कल

#Note → जब दोनो पद विशेषण हो, और विशेषण के ही अर्थ मे आये तब वहाँ द्वंद्व समास नही होता, # वहाँ कर्मधारय समास हो जाता है।-

लँगडा-लूला आदमी यह काम नहीं कर सकता
भूखा-प्यासा लडका सो गया।-
इस गाँव मे बहुत से लोग अंधे-बहरे है।-

Scanned by CamScanner

3. बहुव्रीहि समास

⇒ समास मे आए पदो को छोडकर किसी अन्य पद/पदार्थ की प्रधानता हो। इसमे कोई भी पद प्रधान नही होता पूरा पद /समस्त पद ही किसी अन्य पद का विशेषण होता है।-

दोनो पद गौण होते है, दोनो मिलकर अन्य पद को प्रधान

पीतांबर - पीत है अम्बर जिसका - विष्णु
नेकनाम - नेक है नाम जिसका
शूलपाणि - शूल है पाणि मे जिसके
वीणापाणि - वीणा है पाणि मे जिसके (सरस्वती)
लंबोदर - लंबा है उदर जिसका - गणेश
नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका - (भगवान शिव)

#

Scanned by CamScanner

4. द्विगु समास

⇒ जिस समस्त पद का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो।-
⇒ विग्रह करते समय "समूह" लगाना होगा।-

सप्त-सिंधु → सात सिन्धुओ का समूह
त्रिलोक → तीन लोको का समूह
तिरंगा → तीन रंगो का समूह
पंचवटी → पाँच वटो का समूह
दशानन → दश आनन (मुख) का समूह

द्विगु — बहुव्रीहि → 99% (If option Both Given) (प्रधानता के आधार पर

⑤ कर्मधारय समास

पूर्व पद गौण होता है, उत्तर पद प्रधान होता है।-
दोनो पदो के बीच उपमान-उपमेय / विशेषण-विशेष्य का सम्बन्ध पाया जाता है।-

उपमान - कोई भी famous वस्तु / प्राणी / चीज
उपमेय - कोई भी साधारण

जिस से तुलना कर रहे है।- (उपमान)
जिसकी तुलना करते है।- (उपमेय)

~~उपमान~~ ~~उपमान-उपमेय~~ ~~उपमेय~~

⇒ उपमान - उपमेय

चन्द मुख
चरन कमल

नील कमल
नील गाय
काली मिर्च
महाराजा
प्रधानमन्त्री

⇒ विशेषण विशेष्य

⇒ तोड़ने पर 99% "जो है" ___

Scanned by CamScanner

6. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में अंतिम पद प्रधान होता है।-
जैसे- तुलसीकृत, रसोई घर, मालगोदाम, रोगग्रस्त

विभक्ति चिह्न आयेगा।- का लोप हो जाता है।-

1. कर्म तत्पुरुष - विग्रह करने पर "को" आयेगा।-
   - # स्वर्गप्राप्त - स्वर्ग को प्राप्त
   - # गृहागत - गृह को आगत
   - # गगनचुंबी - गगन को चूमने वाला
   - # रथचालक - रथ को चलाने वाला

2. करण तत्पुरुष - "से", "के द्वारा"
   - # आचारकुशल - आचार से कुशल
   - # तुलसीकृत - तुलसी के द्वारा कृत
   - # रसभरा - रस से भरा
   - # रेखांकित - रेखा से अंकित

Scanned by CamScanner

3. सम्प्रदान तत्पुरुष - "के लिये"

देश भक्ति - देश के लिये भक्ति
विद्यालय - विद्या के लिये आलय
हथकड़ी - हाथ के लिये कड़ी
रसोईघर - रसोई के लिये घर

4. अपादान तत्पुरुष - "से" (अलग होने का भाव)

रणविमुख - रण से विमुख
देश निकाला - देश से निकाला
काम चोर - काम से जी चुराने वाला
पापमुक्त - पाप से मुक्त
नेत्रहीन - नेत्र से हीन

Scanned by CamScanner

5. सम्बन्ध तत्पुरुष → "का, की, के" विभक्ति का लोप हो जाता है।-

विद्याभ्यास - विद्या का अभ्यास
सेनापति - सेना का पति
देशरक्षा - देश की रक्षा
पराधीन - पर के अधीन

6. अधिकरण तत्पुरुष - "मे", "पर" विभक्ति का लोप हो जाता है।-

गृहप्रवेश - गृह मे प्रवेश
नरोत्तम - नरो मे उत्तम
आपबीती - आप पर बीती
हरफनमौला - हर फन (हुनर) मे मौला (जानकार)

* नञ् तत्पुरुष - इसमे नही का बोध होता है।-

अनदेखा
अन्याय
नालायक
नास्तिक
अनुचित

Scanned by CamScanner